हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
¼Li'kZ½¼ikB 2½¼ यशपाल & nq[k dk vf/kdkj ½
¼d{kk 9½

प्रश्न vH;kl

[kM & d

प्रश्न 1½
मनुष्य के जीवन में पोषाक का क्या महत्व है ?
mRrj 1½
पोषाक का मनुष्य के जीवन में बड़ा ही महत्व है । पोषाक के द्वारा ही समाज में मनुष्य की स्थिति का पता चलता है , क्योंकि आज के समाज में मनुष्य को समाज में संस्कारों से नहीं बल्कि पोषाक से सम्मान मिलता है ।

प्रश्न 2½
पोषाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है ?
mRrj 2½
हमारी पोषाक ही समाज में हमारे स्टेटस को दर्शाती है । लेकिन जब हम अपने से नीचे किसी व्यक्ति से बात या उसकी सहायता करना चाहते हैं तब पोषाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बन जाती है और हम यह सोचकर पीछे हट जाते हैं कि लोग क्या कहेंगे ।

प्रश्न 3½
लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया ?
mRrj 3½
लेखक साफ–सुथरे धुले कपड़े पहने हुए था जबकि स्त्री फटे हुए गंदे वस्त्र पहने हुए थी । यदि लेखक उसके पास जाकर उसका हाल जानता तो लोग क्या कहते , इसी डर से तेखक उस स्त्री के रोने का कारण नहीं जान पाया।

प्रश्न 4½
भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था ?
mRrj 4½
भगवाना शहर के पास अपनी डेढ़ बीघा जमीन में खरबूजों की खेती करके उन्हें सड़क के किनारे फुटपाथ पर बेचकर अपने परिवार का निर्वाह करता था।

प्रश्न 5½
लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी ?
mRrj 5½
बुढ़िया के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था और उसकी बहू बुखार से तड़प रही थी बच्चे भूख से व्याकुल थे । इसलिए लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने के लिए चल पड़ी ।

प्रश्न 6%

बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की स्रभ्रांत महिला की याद क्यों आई ?

mRrj 6%

बुढ़िया अपनी गरीबी के कारण बेटे की मृत्यु के दूसरे दिन ही खरबूजे खरबूजे बेचने आ गई थी। जबकि उसके पड़ोस की महिला अपने पुत्र की मृत्यु के वियोग में पिछले एक महीने से बीमार थी रो रही थी डॉक्टर और नर्स उसकी सेवा में लगे रहते थे क्योंकि उसके पास अपने दुःख को मनाने का समय और सुविधा थी ।

[kM & [k

प्रश्न 1%

बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या–क्या कह रहे थे ?

mRrj 1%

बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में तरह –तरह की बातें कर रहे थे । कोई उसे लालची कह रहा था कि इसे अपने बेटे के मरने का भी गम नहीं है इसके लिए सब पैसा है रिश्ते नाते सब बाद में हैं , कोई उसकी ओर घृणा से देखते हुए थूक रहा था । कोई धर्म की दुहाई देते हुए सूतक में खबूजे बेचने पर धर्म के भ्रष्ट हो जाने की बात कर रहा था । लेकिन कोई भी उसके दुःख के बारे में नहीं जानता था इसीलिए सब उसे कोसे जा रहे थे।

प्रश्न 2%

पास–पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?

mRrj 2%

पास–पड़ोस की दुकानों पर पूछने पर लेखक को बुढ़ियाा की वास्तविकता का पता चला । लोगों ने बताया कि उसका एक तेईस साल का बेटा था जो पूरे घर का पालन–पोषण करता था । एक दिन खेत में खरबूजे तोड़ते समय उसका पैर आराम करते हुए एक साँप पर पड़ गया उसके काटने से उसके बेटे की मृत्यु हो गई । अब घर में कमाने वाला कोई नहीं है । अपने पोते–पोती और बहू के पालन करने की जिम्मेंदारी अब इस बुढ़िया पर आ गई है।

¼Li'f)¼ikB 2½¼ **यशपाल** & n%[k dk vf/kdkj ½
¼d{kk 9½

प्रश्न 3%
लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या—क्या उपाय किए ?

mRrj 3%
अपने लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने वह सब कुछ किया जितना उसके बस में था वह दौड़कर ओझा को बुला लाई उसने काफी झाड़—फूँक की मगर उसका कुछ भी असर न हुआ । नाग देवता की पूजा भी की गई दान—दक्षिणा भी दी गई पर इन सबका भी कोई असर न हुआ घर का सारा सामान भी चला गया पर उसका बेटा न बच सका ।

प्रश्न 4%
इस पाठ का शीर्षक ' दुःख का अधिकार ' कहाँ तक सार्थक है । स्पष्ट कीजिए।
mRrj 4%
समाज में अमीर हो या गरीब सभी को दुःख होता है लेकिन पाठ के आधर पर ऐसा दिखाया गया है कि समाज में दुःख है तो उसको मनाने के लिए समाज में हैसियत भी होनी चाहिए। जो गरीब है उसे रोने और दुःख माने का भी अधिकार नहीं है उसका दुःख लोगों को दिखावा लगता है , वहीं दूसरी ओर एक संभ्रांत महिला जो अपने बेटे के दुःख में एक महीने से बीमार पड़ी है उसकी सेवा में डॉक्टर नर्स दिन—रात लगे रहतें है पर फिर भी वह अपने दुःख से नहीं उभर पाई है । जिसे देखकर ऐसा लगता है कि दुःख को मनाने का अधिकार भी केवल अमीरों को है गरीबों को दुःख को मनाने का भी अधिकार नहीं है । अतः पाठ का शीर्षक दुःख का अधिकार सर्वथा ठीक है ।

आशय Li"V dhft,%

1-
जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है ।
mRrj 1%
आकाश में उड़ती पतंग को उसकी डोर नियंत्रित करती है और उसके टूट जाने पर भी एकदम उसे नीचे नहीं गिरने देती ठीक उसी प्रकार समाज में व्यक्ति सामाजिक , आर्थिक डोर से बँधा रहता है और चाह कर भी वह अपने आप को नीचे नहीं ला सकता उसकी पोशाक उसे ऐसा करने से राकती है । लेखक भी झुककर गरीब महिला की मदद करना चाहता है मगर समाज के डर से और अपनी पोषाक के मैला हो जाने के डर से वह उस गरीब महिला की मदद नहीं कर पाता है ।

2.
इनके लिए बेटी—बेटा , खसम—लुगाई , धर्म—ईमान सब रोटी का टुकड़ा हैं ।
mRrj 2%
सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य को समाज के नियमों को मानना पड़ता है और समाज में भौतिक जरूरतों से ज्यादा परंपराओं को महत्व दिया जाता है । पंक्तियों में बताया गया है कि गरीबों के लिए सब कुछ पैसा है , मगर ऐसा नहीं है । हम दूसरे पर आरोप तो लगा देते हैं मगर उसके पीछे की मजबूरी को नहीं देखते है। तभी हम उनके लिए ऐसा कहते हैं।

3.
शोक करने , गम मनाने के लिए सहूलियत चाहिए और. दुःखी होने का भी अधिकार है ।

mRrj 3%

समाज में सभी को दुःख होता है पर उसे मनाने के लिए सहूलियत होना चाहिए ऐसा न होने पर किसी को भी दुःख मनाने का अधिकार नहीं है । यदि कोई ऐसा करता हे तो वह उपहास और उलाहने का पात्र बन सकता है । जिसके पास सहूलियत है उसे दुःख मनाने का पूरा अधिकार है और समाज भी उसके दुःख का भागीदार बन जाता है ।